Krishi Kumbh
Online E-Magazine
Www.KrishiKumbh.Com

कृषि कुंभ

E-ISSN: 2582-9769

कृषि कुंभ
हिंदी मासिक पत्रिका

खण्ड 05 भाग 09, (फरवरी, 2026)
पृष्ठ संख्या 18–19

किसानों की आय वृद्धि में आंवला मूल्य संवर्धन का महत्व

सुप्रिया[1], इशिता उमर[2] एवं प्रतीक कुमार[3]

[1]एसोसिएट प्रोफेसर, कृषि अर्थशास्त्र विभाग,
[2]पीएच.डी. स्कॉलर, कृषि अर्थशास्त्र विभाग,
[3]पीएच.डी. स्कॉलर, कृषि विस्तार शिक्षा विभाग,
आचार्य नरेंद्र देव कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय, अयोध्या, भारत।

Email Id: – drsupriya.anduat2019@gmail.com

परिचय

आंवला, जिसे भारतीय संस्कृति में श्अमृत फलश कहा जाता है, अपने औषधीय गुणों और विटामिन सी की प्रचुरता के कारण वैश्विक स्तर पर अत्यधिक महत्वपूर्ण है। भारत विश्व में आंवला का सबसे बड़ा उत्पादक है, जहाँ वैश्विक उत्पादन का लगभग 90ः हिस्सा उत्पादित होता है। यह शोध पत्र उत्तर प्रदेश के प्रतापगढ़ जिले के श्सदरश ब्लॉक में किए गए अध्ययन पर आधारित है, जिसका उद्देश्य आंवला की खेती में मूल्य संवर्धन की संभावनाओं और किसानों की आय पर इसके प्रभाव का विश्लेषण करना है। अध्ययन के निष्कर्ष बताते हैं कि कच्चे आंवले की बिक्री (18–22 रुपये) की तुलना में प्रसंस्कृत उत्पादों जैसे कैंडी और मुरब्बा में मुनाफे की संभावना 10 गुना तक अधिक है। इसके बावजूद, अपर्याप्त विपणन चौनल और मूल्य संवर्धन की कमी के कारण किसान अपनी उपज का उचित लाभ नहीं उठा पा रहे हैं। यह लेख वर्ष 2025 के बदलते उत्पादन परिदृश्य का भी विवरण प्रस्तुत करता है, जहाँ मध्य प्रदेश ने उत्तर प्रदेश को पछाड़कर शीर्ष उत्पादक का स्थान प्राप्त किया है, और अंत में नीतिगत सुझाव प्रस्तुत करता है।

आंवला उत्पादन एवं किस्में

आंवला की खेती भारतीय कृषि अर्थव्यवस्था का एक अभिन्न अंग है। ऐतिहासिक रूप से, उत्तर प्रदेश भारत का आंवला हब रहा है, जिसमें प्रतापगढ़ जिला आंवला खेती के लिए एक हाई फोकस बेल्टश के रूप में विख्यात है। अध्ययन के लिए चयनित सदर ब्लॉक में आंवला की वैज्ञानिक और स्थानीय, दोनों प्रकार की किस्में पाई जाती हैं। आचार्य नरेंद्र देव कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय द्वारा विकसित वैज्ञानिक किस्में,

विशेष रूप से N–7 और N–10, यहाँ प्रमुखता से उगाई जाती हैं। उत्पादन आंकड़ों के अनुसार, N–7 किस्म के एक पौधे से लगभग 4 क्विंटल फल प्राप्त होता है। इसके समानांतर, स्थानीय किस्में जैसे चकिया और लक्ष्मी बावन बागवानी के लिए अत्यधिक पसंद की जाती हैं, जहाँ लक्ष्मी बावन का एक पौधा 5–6 क्विंटल तक फल देने में सक्षम है। आंवला के पौधे का गर्भावधि काल 4–5 वर्ष होता है, जिसके पश्चात वृक्ष की आयु बढ़ने के साथ फलन क्षमता में वृद्धि होती है। यद्यपि भारत में आंवला का कुल उत्पादन लगभग 1.2 मिलियन टन के आसपास रहता है, लेकिन क्षेत्रीय स्तर पर उत्पादन के आंकड़ों में उतार–चढ़ाव देखा गया है।

आर्थिक विश्लेषण, विपणन और चुनौतियां

अध्ययन में किए गए आर्थिक विश्लेषण से स्पष्ट होता है कि मूल्य संवर्धन की कमी किसानों की कम आय का मुख्य कारण है। बाजार में कच्चा आंवला मात्र 18–22 रुपये प्रति किलोग्राम की दर से बिकता है, जबकि प्रसंस्करणकर्ताओं द्वारा तैयार कैंडी और मुरब्बा 200–280 रुपये प्रति किलोग्राम और बर्फी या लड्डू 200–250 रुपये प्रति किलोग्राम तक बेचे जाते हैं। यह स्पष्ट अंतर दर्शाता है कि प्रसंस्करण उद्योग किसानों की तुलना में बहुत अधिक शुद्ध लाभ कमा रहा है।

विपणन व्यवस्था में किसान – ठेकेदार–उपभोक्ता चैनल हावी है, जहाँ ठेकेदार फसल कटाई से पहले ही 20,000 से 80,000 रुपये प्रति बीघा (उम्र और किस्म के आधार पर) की दर से बगीचे खरीद लेते हैं। यद्यपि तुड़ाई और परिवहन का खर्च ठेकेदार उठाते हैं, परंतु लाभ का बड़ा हिस्सा उन्हीं के पास जाता है। इसके अतिरिक्त, किसानों को आवारा पशुओं द्वारा नए पौधों को नुकसान पहुँचाने जैसी समस्याओं का सामना करना पड़ता है, जिसके लिए महंगी फेंसिंग आवश्यक है। साथ ही, नई पीढ़ी में बागवानी के प्रति घटती रुचि एक गंभीर चिंता है। इन्ही बाधाओं के परिणामस्वरूप, वर्ष 2025 के आंकड़ों के अनुसार, मध्य प्रदेश ने आंवला उत्पादन में अभूतपूर्व वृद्धि दर्ज की है और उत्तर प्रदेश को पछाड़कर देश के सबसे बड़े उत्पादक के रूप में अपनी जगह बना ली है।

निष्कर्ष और सुझाव

इस अध्ययन का निष्कर्ष यह है कि यदि किसान केवल कच्चे फल बेचने के बजाय मूल्य संवर्धन अपनाएं, तो उनकी आय में 3 से 4 गुना वृद्धि संभव है। उत्तर प्रदेश को अपना खोया हुआ गौरव पुनः प्राप्त करने और किसानों की स्थिति सुधारने के लिए ठोस नीतिगत हस्तक्षेप की आवश्यकता है। सरकार को चाहिए कि वह किसानों को छोटी प्रसंस्करण इकाइयाँ स्थापित करने के लिए सब्सिडी और प्रोत्साहन प्रदान करे। इसके अलावा, किसान–निर्मित उत्पादों के लिए अलग बाजार या आउटलेट की व्यवस्था होनी चाहिए ताकि वे बड़े ब्रांड्स से प्रतिस्पर्धा कर सकें। चूंकि आंवला तुड़ाई और प्रसंस्करण में ग्रामीण महिलाओं की भागीदारी सर्वाधिक है, अतः उनके लिए आधुनिक मूल्य संवर्धन तकनीकों पर कौशल विकास और प्रदर्शन कार्यक्रम आयोजित किए जाने चाहिए। यह कदम न केवल किसानों की आय बढ़ाएगा, बल्कि ग्रामीण सशक्तिकरण की दिशा में भी एक मील का पत्थर साबित होगा।